06-11-2020

संस्कृत सामान्यम् । उपशास्त्री II

अनिवार्य प्रथम पत्रम् ।

प्रश्न → ङीप् प्रत्यय का प्रयोग कब और कहाँ होता है ? उदाहरण द्वारा पुष्ट करें ।

उत्तर →

कुमारावस्था के अर्थ में वर्तमान अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय हो, ऐसा वैयाकरणों द्वारा विधान किया गया है । पाणिनि मुनि का सूत्र है → "वयसि प्रथमे ।" प्रथमवयोवाचिनोऽदन्तात् स्त्रियां ङीप् स्यात् ।

कुमारावस्था अथवा आयु (उम्र) की प्रथमावस्था का वाचक शब्द बाल, वत्स आदि भी हैं किन्तु इन शब्दों के साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् (आ) प्रत्यय लगता है । तब बाला, वत्सा आदि पद बनते हैं । इनके साथ ङीप् प्रत्यय क्यों नहीं लगा ?

"वयसि प्रथमे," यहाँ वयसि का अर्थ युवावस्था से है । प्रथमे यानि नव (नया) । तब सूत्रार्थ होगा → अदन्त (अकारान्त) प्रातिपदिक शब्द जो प्रथम युवावस्था का बोधक हो, उसके साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय हो ।

यथा → कुमार + ङीप् = कुमारी ।
वच्चूट + ङीप् = वच्चूटी (नवयौवना स्त्री) ।
चिरण्ट + ङीप् = चिरण्टी ( " " ) ।

06-11-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य),
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।

संस्कृतसामान्यम् ।
अनिवार्यपत्रम् ।

उपशास्त्री I

Date
Page

शब्दरूपम्

"गो" शब्दः ओकारान्तः पुल्लिङ्गम् ।

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्र० वि० | गौः | गावौ | गावः |
| द्वि० " | गाम् | " | गाः |
| तृ० " | गवा | गोभ्याम् | गोभिः |
| च० " | गवे | " | गोभ्यः |
| पं० " | गोः | " | " |
| ष० " | गोः | गवोः | गवाम् |
| स० " | गवि | " | गोषु |
| सम्बोधनम् | हे गौः ! | हे गावौ ! | हे गावः ! |

सखि शब्दः इकारान्तः पुल्लिङ्गम् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० वि० | सखा | सखायौ | सखायः |
| द्वि० वि० | सखायम् | " | सखीन् |
| तृ० " | सख्या | सखिभ्याम् | सखिभिः |
| च० " | सख्ये | " | सखिभ्यः |
| पं० " | सख्युः | " | " |
| ष० " | " | सख्योः | सखीनाम् |
| स० " | सख्यौ | " | सखिषु |
| सम्बो० | हे सखे ! | हे सखायौ ! | हे सखायः ! |

06-11-2020

डॉ० निर्मलकुमार झा, ( स० प्राचार्य
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

06-11-2020

संस्कृत सामान्यम् । उपशास्त्री

अनिवार्य प्रथम पत्रम् ।

प्रश्न → ङीप् प्रत्यय का प्रयोग कब और कहाँ होता है ? उदाहरण द्वारा पुष्ट करें ।

उत्तर →

कुमारावस्था के अर्थ में वर्तमान अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय हो, ऐसा वैयाकरणों द्वारा विधान किया गया है । पाणिनि मुनि का सूत्र है → "वयसि प्रथमे ।" प्रथमवयोवाचिनोऽदन्तात् स्त्रियां ङीप् स्यात् ।

कुमारावस्था अथवा आयु (उम्र) की प्रथमावस्था का वाचक शब्द बाल, वत्स आदि भी हैं किन्तु इन शब्दों के साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् (आ) प्रत्यय लगता है । तब बाला, वत्सा आदि पद बनते हैं । इनके साथ ङीप् प्रत्यय क्यों नहीं लगा ?

"वयसि प्रथमे," यहाँ वयसि का अर्थ युवावस्था से है । प्रथमे यानि नव (नया) । तब सूत्रार्थ होगा → अदन्त (अकारान्त) प्रातिपदिक शब्द जो प्रथम युवावस्था का बोधक हो, उसके साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय हो ।

यथा → कुमार + ङीप् = कुमारी ।
बच्चूट + ङीप् = बच्चूटी (नवयौवना स्त्री) ।
चिरण्ट + ङीप् = चिरण्टी ( " " ) ।

06-11-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

06-11-2020

शास्त्री

साहित्यम् ।

छन्दविचारः ।

प्रश्न → निम्नांकित छन्द किस जाति के हैं ? उनके लक्षण लिखें ।

उत्तर →

उपेन्द्रवज्रा → यह त्रिष्टुप् जाति का छन्द है । इस छन्द में ग्यारह अक्षर होते हैं । इस छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु क्रम से होते हैं । इसके पादान्त में यति होती है ।
लक्षण है → " उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गः । "
उदाहरण पूर्व की कक्षा में दिया जा चुका है । छात्र-छात्राएँ उन्हें याद कर लें ।

भुजङ्गप्रयातम् → यह छन्द बारह अक्षरों वाली जगती जाति से आता है । इस छन्द में चार यकार यानि चार यगण होते हैं ।
" भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः । "

शिखरिणी → अत्यष्टि जाति का यह छन्द है । इसमें सत्रह अक्षर होते हैं । अक्षरों का क्रम इस प्रकार है → यगण, मगण, नगण, सगण तथा एक लघु एवं एक गुरु ।
इस छन्द में छठे तथा अंतिम सत्रहवें अक्षर पर यति होती है → " रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी । "
यति → षड् रसाः, (छठा) रुद्रैः (एकादश रुद्राः) ग्यारहवां अक्षर यानि पादान्त के सत्रहवां अक्षर पर यति हो ।

06-11-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा ( स० प्राचार्य )
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ ।